📄 उत्तर कुंजी – कक्षा 12 राजनीति शास्त्र (पूर्ण 1–40)

खंड क (1 अंक प्रत्येक): वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs)

क्र. उत्तर

1 (D) सीरिल रेडक्लिफ

2 (C) 1930 का दशक

3 (A) डी.के. बरुआ

4 (D) 1971

5 (D) गुजरात

6 (B) 1991

7 (C) न्यूयॉर्क

8 (C) 1992

9 (C) डेंग स्याओपिंग

10 (A) भारत–बांग्लादेश

11 (B) एंटोनियो गुटेरेस

12 (D) उपरोक्त सभी

एक शब्द में उत्तर दीजिए:

13. द्रविड़ मुनेत्र कड़गम (DMK)

14. बी. पी. मंडल

15. 1974

रिक्त स्थान पूर्ति:

16. श्यामाप्रसाद मुखर्जी

17. गुलजारीलाल नंदा

18. विनायक दामोदर सावरकर

अभिकथन-कारण आधारित प्रश्न:

19. (A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

20. (B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता।

खंड ख (2 अंक प्रत्येक): लघु उत्तरात्मक प्रश्न

21.

➤ सांप्रदायिक दंगे और हिंसा
➤ शरणार्थी संकट और विस्थापन

22.

➤ सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और हिंदुत्व
➤ एक भारत, श्रेष्ठ भारत की अवधारणा

23.

➤ स्वतंत्र विदेश नीति से भारत अपनी संप्रभुता बनाए रख सकता था
➤ यह उपनिवेशवाद से पूर्ण मुक्ति का संकेत था

(वैकल्पिक)
पंचशील: पंचशील के पाँच सिद्धांत – एक-दूसरे की संप्रभुता का सम्मान, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं, समानता, शांति और सह-अस्तित्व – भारत-चीन के बीच 1954 में स्थापित हुए।

या
भारत की विदेश नीति की तीन विशेषताएँ:
➤ गुटनिरपेक्षता
➤ शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व
➤ संयुक्त राष्ट्र में सक्रिय भागीदारी

24.

➤ दल-बदल का अर्थ है निर्वाचित सदस्य द्वारा पार्टी परिवर्तन
➤ इससे अस्थिरता आती है, जिसे रोकने हेतु 1985 में कानून लाया गया

25.

➤ साझा समस्याओं का समाधान
➤ क्षेत्रीय सहयोग और विकास की आवश्यकता

26.

➤ 1972 की एक रिपोर्ट जो संसाधनों की सीमाओं और अनियंत्रित विकास की चेतावनी देती है

(वैकल्पिक)
पर्यावरण की चिंता के दो कारण:
➤ जलवायु परिवर्तन
➤ जैव विविधता का विनाश

या
➤ प्राकृतिक, कृत्रिम, और सामाजिक पर्यावरण की संरचना

27.

➤ भारत-पाक युद्ध के बाद शांति बहाली हेतु ताशकंद समझौता (1966) हुआ
➤ युद्ध से पूर्व की स्थिति बहाल करना और शांति बनाए रखना

28.

➤ वैश्वीकरण का अर्थ है दुनिया भर में वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी और संस्कृति का आदान-प्रदान

(वैकल्पिक)
➤ घरेलू उद्योगों को खतरा, सांस्कृतिक एकरूपता
या
➤ व्यापार बढ़ाना, निवेश आकर्षित करना, वैश्विक संपर्क बनाना

खंड ग (3 अंक प्रत्येक): दीर्घ उत्तरात्मक प्रश्न

29.

➤ पूर्व में सीमा, भाषा, जनजातीय मुद्दे प्रमुख थे
➤ पश्चिम में विभाजन और सांप्रदायिक हिंसा की चुनौती

30.

➤ संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण
➤ आर्थिक आत्मनिर्भरता
➤ सामाजिक समानता

(वैकल्पिक)

➤ स्वतंत्रता के बाद संसाधनों का नियोजित उपयोग आवश्यक था

या

➤ विकास भू-राजनीति, शासन प्रणाली और जनता की भागीदारी पर निर्भर करता है

31.

➤ विपक्ष कमजोर हुआ, लोकतांत्रिक संस्थाएं प्रभावित हुईं
➤ कांग्रेस के विरुद्ध जनता पार्टी का उदय हुआ

(वैकल्पिक)

➤ राजनीतिक स्वतंत्रता सीमित हुई
➤ मीडिया सेंसरशिप
➤ नागरिक अधिकारों का हनन

या

➤ वचनबद्ध न्यायपालिका वह है जो कार्यपालिका की इच्छानुसार निर्णय देती है – यह आपातकाल के दौरान देखने को मिला

32.

➤ मंडल-कमंडल, गठबंधन की राजनीति, आर्थिक उदारीकरण, क्षेत्रीय दलों का उदय
➤ राष्ट्रीय दलों में गठबंधन की बाध्यता

33.

➤ आर्थिक असफलता, अफगान युद्ध, भ्रष्टाचार, राजनीतिक असंतोष, सूचना की स्वतंत्रता की मांग

34.

➤ साझा समस्याओं का समाधान, क्षेत्रीय शांति

(वैकल्पिक)

➤ SAFTA व्यापारिक शुल्क घटाने हेतु दक्षिण एशियाई समझौता

या

➤ चीन में खुले द्वार नीति, निवेश, उद्योग और निर्यात में वृद्धि

35.

➤ शक्ति संतुलन = दो या अधिक देशों में सैन्य/राजनीतिक संतुलन
➤ एक देश सैन्य गठबंधन, हथियारों के विकास से इसे बनाए रखता है

36.

➤ औद्योगीकरण, वाहनों से प्रदूषण
➤ वनों की कटाई

खंड घ (5 अंक प्रत्येक): निबंधात्मक प्रश्न

37.

(मुख्य उत्तर)
भारत की विदेश नीति में गुटनिरपेक्षता, क्षेत्रीय सहयोग और संप्रभुता का सम्मान मुख्य आधार रहे हैं, लेकिन 1971 के बांग्लादेश युद्ध ने भारत की क्षेत्रीय शक्ति के रूप में स्थिति को स्पष्ट रूप से उजागर किया।

- 1971 में पाकिस्तान द्वारा पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में अत्याचार और भारत में आए लाखों शरणार्थियों ने सुरक्षा संकट खड़ा किया।
- भारत ने कूटनीति, सैन्य रणनीति और अंतरराष्ट्रीय दबाव के बीच संतुलन बनाकर युद्ध लड़ा और 13 दिनों के भीतर पाकिस्तान को हराकर बांग्लादेश की स्वतंत्रता सुनिश्चित की।
- भारत की यह कार्रवाई उसकी रक्षा क्षमताओं, निर्णय शक्ति और क्षेत्रीय नेतृत्व को दर्शाती है।
- यह युद्ध इस बात का प्रमाण है कि भारत आवश्यकता पड़ने पर क्षेत्रीय महाशक्ति की भूमिका निभा सकता है।

निष्कर्ष:
भारत की विदेश नीति मुख्यतः शांतिपूर्ण रही है, लेकिन जब राष्ट्रीय हित की बात आती है तो वह दृढ़ रुख भी अपना सकता है — यह उसकी क्षेत्रीय महाशक्ति बनने की क्षमता को दर्शाता है।

(वैकल्पिक A) भारत की परमाणु नीति पर टिप्पणी करें।

उत्तर:
भारत की परमाणु नीति का आधार **"नो फर्स्ट यूज़"** (No First Use) और **"न्यूनतम प्रतिरोधक क्षमता"** (Minimum Credible Deterrence) है।

- भारत ने 1974 में पोखरण में पहला परमाणु परीक्षण किया और 1998 में पुनः परीक्षण किए।
- भारत की नीति आत्मरक्षा और परमाणु हथियारों के गैर-प्रसार पर आधारित है।
- भारत NPT और CTBT में शामिल नहीं हुआ, क्योंकि वे भेदभावपूर्ण माने जाते हैं।
- भारत की नीति यह सुनिश्चित करती है कि परमाणु हथियार केवल अत्यंत आवश्यक स्थिति में ही प्रयोग किए जाएँगे।

निष्कर्ष:
भारत की परमाणु नीति संतुलित, जिम्मेदार और वैश्विक शांति के पक्ष में है, जो शक्ति का प्रदर्शन नहीं बल्कि आत्म-रक्षा पर केंद्रित है।

(वैकल्पिक B) विदेश नीति के मामलों पर सर्वसम्मति पर टिप्पणी करें।

उत्तर:
भारत में विदेश नीति के मामलों में आमतौर पर **सर्वदलीय सहमति** (Bipartisan Consensus) रही है, जिससे विदेश नीति में निरंतरता बनी रहती है।

- कांग्रेस या अन्य किसी भी सरकार के समय, विदेश नीति में अधिक परिवर्तन नहीं हुए हैं।
- गुटनिरपेक्षता, पड़ोसी देशों से संबंध, संयुक्त राष्ट्र की भूमिका आदि पर लगभग सभी दलों की एक जैसी सोच रही है।
- उदाहरण: पाकिस्तान, चीन या अमेरिका से संबंधों में कोई बड़ा विरोध नहीं देखा गया।
- यह सर्वसम्मति भारत की वैश्विक छवि को मजबूत बनाती है।

निष्कर्ष:
विदेश नीति के मामलों पर राष्ट्रीय एकता और राजनीतिक सर्वसम्मति, भारत की विश्वसनीयता और दीर्घकालिक हितों की रक्षा करती है।

38.

आनंदपुर साहिब प्रस्ताव 1973 में **अकाल दल** द्वारा पारित किया गया था, जिसमें पंजाब को अधिक **राजनीतिक और आर्थिक स्वायत्तता** की माँग की गई थी।

यह प्रस्ताव विवादास्पद क्यों था:

1. **संघीय ढांचे की चुनौती:**
   प्रस्ताव में भारत के संघीय ढांचे को कमजोर करने वाली बातें थीं, जिससे केंद्र और राज्य के संबंधों पर प्रश्न उठे।

2. **धार्मिक स्वरूप:**
   इसमें पंजाब को एक विशेष धार्मिक पहचान देने की बात कही गई, जिससे देश की **धर्मनिरपेक्षता** पर सवाल खड़े हुए।

3. **राजनीतिक प्रयोग:**
   विरोधी दलों ने इसे **खालिस्तान आंदोलन** से जोड़ा, जिससे इसके उद्देश्यों को संदेह की दृष्टि से देखा गया।

4. **केंद्र–राज्य तनाव:**
   प्रस्ताव ने पंजाब और केंद्र सरकार के बीच **विश्वास की खाई** बढ़ाई, जिससे बाद में उग्रवाद की स्थिति भी उत्पन्न हुई।

निष्कर्ष:
हालाँकि इसका उद्देश्य पंजाब के विकास और सिख पहचान की रक्षा करना था, लेकिन इसकी भाषा और समय ने इसे विवादास्पद बना दिया।

(वैकल्पिक)
असम आंदोलन (1979–1985) एक **छात्र नेतृत्व वाला आंदोलन** था, जो अवैध विदेशी नागरिकों की घुसपैठ के विरुद्ध शुरू हुआ, परंतु इसके मूल में गहरी **सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याएँ** थीं।

आंदोलन के प्रमुख पहलू:

1. **सांस्कृतिक अभियान:**
   आंदोलन का मूल उद्देश्य असम की **भाषा, संस्कृति और पहचान** की रक्षा करना था, जो विदेशी घुसपैठियों से खतरे में थी।

2. **अभिमान की भावना:**
   असमवासियों में अपने इतिहास, संस्कृति और भूमि पर गर्व था। बाहरी लोगों की बढ़ती संख्या ने इस आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाई।

3. **आर्थिक पिछड़ापन:**
   असम के संसाधनों का दोहन हो रहा था, लेकिन राज्य में बेरोज़गारी और बुनियादी विकास की भारी कमी थी।
   बाहरी लोगों को नौकरी मिलने से **स्थानीय युवाओं में असंतोष** गहराया।

परिणाम:

- असम समझौता (1985) के तहत 1971 के बाद आने वाले विदेशियों को वापस भेजने की शर्त बनी।
- आंदोलन ने **लोकतांत्रिक चेतना** को भी बढ़ावा दिया।

निष्कर्ष:
असम आंदोलन सिर्फ जनसंख्या समस्या नहीं था, बल्कि यह असम के लोगों की **सांस्कृतिक अस्मिता, आत्मसम्मान और आर्थिक अधिकारों** की लड़ाई थी।

39.

संयुक्त राष्ट्र संघ (UNO) की स्थापना 1945 में हुई थी, जिसका उद्देश्य **अंतरराष्ट्रीय शांति, सुरक्षा और सहयोग** बनाए रखना था।
हालांकि यह संस्था कई बार संघर्षों को रोकने में विफल रही है (जैसे: सीरिया, यूक्रेन), फिर भी इसे समाप्त नहीं किया जा सकता।

इसके बनाए रखने के कारण:

1. **एकमात्र वैश्विक मंच:**
   संयुक्त राष्ट्र ऐसा अकेला संगठन है जहाँ **सभी देशों को समान रूप से भाग लेने का अधिकार** है।
2. **बहुपक्षीय वार्ता और समाधान:**
   यह मंच विभिन्न देशों के बीच **संवाद और समझौते का स्थान** है।
3. **विकास और मानवाधिकार कार्य:**
   इसके अंतर्गत WHO, UNICEF, UNESCO जैसे संगठन शिक्षा, स्वास्थ्य और मानव अधिकारों पर कार्य कर रहे हैं।
4. **शांति मिशन (Peacekeeping):**
   यह संगठन दुनिया के कई हिस्सों में शांति स्थापित करने के लिए सैनिक बल भेजता है, जैसे कि अफ्रीका और एशिया के कई देशों में।
5. **परमाणु प्रसार और जलवायु पर नियंत्रण:**
   जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद और शरणार्थियों की समस्या जैसे **वैश्विक मुद्दों पर समन्वय** केवल संयुक्त राष्ट्र ही कर सकता है।

निष्कर्ष:
हालाँकि संयुक्त राष्ट्र की कुछ सीमाएँ हैं, लेकिन वैश्विक संतुलन बनाए रखने के लिए यह संस्था आज भी **अत्यंत आवश्यक** है।

(वैकल्पिक)
भारत, संयुक्त राष्ट्र का संस्थापक सदस्य है और अंतरराष्ट्रीय शांति व सुरक्षा की स्थापना में उसका **सक्रिय और रचनात्मक योगदान** रहा है।

भारत के योगदान:

1. **शांति सेना (Peacekeeping):**
   भारत ने संयुक्त राष्ट्र के सबसे बड़े **शांति मिशनों** में भाग लिया है — जैसे कि कांगो, सिएरा लियोन, सूडान आदि।
2. **गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM):**
   भारत ने शीतयुद्ध काल में गुटनिरपेक्षता को बढ़ावा दिया, जिससे **वैश्विक तनाव कम हुआ।**
3. **परमाणु निरस्त्रीकरण:**
   भारत ने **परमाणु हथियारों के निषेध** और **न्यायपूर्ण परमाणु समझौतों** की वकालत की है।
4. **आतंकवाद विरोध:**
   भारत ने बार-बार संयुक्त राष्ट्र में **आतंकवाद के खिलाफ कड़े कानूनों** की माँग की है।
5. **जलवायु परिवर्तन और विकास:**
   भारत ने जलवायु समझौते (पेरिस समझौता) और सतत विकास के लक्ष्यों में **सक्रिय भूमिका निभाई** है।

निष्कर्ष:
भारत की विदेश नीति हमेशा **शांति, संवाद और सहयोग** पर आधारित रही है, और उसने वैश्विक मंचों पर **जिम्मेदार देश** की भूमिका निभाई है।

40.

वैश्वीकरण की आर्थिक परिणतियाँ क्या रही हैं? इसका भारत पर क्या प्रभाव पड़ा?

वैश्वीकरण की आर्थिक परिणतियाँ:

- **वाणिज्य और निवेश में वृद्धि:** देशों के बीच व्यापार और विदेशी निवेश में तेजी आई।
- **तकनीकी प्रगति:** सूचना और संचार तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास हुआ।

- **उत्पादकता और प्रतिस्पर्धा**: वैश्विक प्रतिस्पर्धा से उत्पादकता बढ़ी और लागत कम हुई।
- **रोजगार के अवसर**: नई औद्योगिक और सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़े।
- **आर्थिक असमानता**: कुछ क्षेत्रों और वर्गों के बीच आय और संसाधनों का असमान वितरण भी बढ़ा।

भारत पर प्रभाव:

- **आर्थिक विकास**: भारत की अर्थव्यवस्था ने तेजी से विकास किया, खासकर आईटी, सेवा और विनिर्माण क्षेत्रों में।
- **विदेशी निवेश**: विदेशी पूंजी का आगमन बढ़ा जिससे उद्योगों को लाभ हुआ।
- **रोजगार**: नई नौकरियों का सृजन हुआ लेकिन अस्थायी और असुरक्षित रोजगार भी बढ़े।
- **सांस्कृतिक प्रभाव**: पश्चिमी जीवनशैली और उपभोक्तावाद में वृद्धि हुई।
- **क्षेत्रीय असमानता**: विकास कुछ शहरों और राज्यों तक सीमित रहा, ग्रामीण और पिछड़े इलाकों की स्थिति उतनी बेहतर नहीं हुई।

(वैकल्पिक)

 तकनीकी प्रगति: इंटरनेट, संचार और परिवहन में सुधार ने सीमाओं को कम किया।

 व्यापार और निवेश की उदारीकरण: कई देशों ने व्यापार में प्रतिबंध कम किए और विदेशी निवेश को प्रोत्साहित किया।

 बहुराष्ट्रीय कंपनियों का विस्तार: कंपनियों ने वैश्विक स्तर पर उत्पादन और विपणन का नेटवर्क बनाया।

 राजनीतिक परिवर्तन: शीत युद्ध के बाद विश्व में नए राजनीतिक समीकरण बने और खुले बाजार को प्रोत्साहन मिला।

 वित्तीय बाज़ारों का वैश्वीकरण: पूंजी के तेज प्रवाह ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को जोड़ दिया।

या

 सकारात्मक दृष्टिकोण: भारत ने वैश्वीकरण को आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति के लिए अवसर माना है।

 आर्थिक सुधार: 1991 में आर्थिक उदारीकरण और वैश्वीकरण की शुरुआत की गई।

 संभावनाएँ: वैश्विक बाजारों में भारत की भागीदारी बढ़ी, रोजगार और विदेशी निवेश में वृद्धि हुई।

 चिंताएँ: सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण, स्थानीय उद्योगों की सुरक्षा, और असमानता बढ़ने की चिंता भी रही।

 समायोजन: भारत ने वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बने रहने के लिए शिक्षा, तकनीकी विकास, और अधुनिकीकरण पर जोर दिया।